

Knowledge and Specialization

The problem of knowledge and specialization, it seems to me, is very important. Let us consider it and see if the mind which is trained in specialization and in knowledge can be free to investigate and to discover whether there is nothing more beyond what it has known, to investigate where knowledge is leading us and the significance of specialization.

There are many avenues of knowledge, and more and more information on a vast scale is becoming available to us. Where is it all leading us to? What is the function of knowledge? We see knowledge is essential at a certain level, in our conscious and unconscious living, in our existence. Can such knowledge be a hindrance to further investigation of man's realization of the total significance of existence? For instance, I may know how to build a bridge. Will that knowledge bring about a radical change in my ways of thinking? It may produce a superficial change or adjustment. But in this present crisis in the world, which is necessary, a mere superficial adjustment or a radical revolution? It seems to me that revolution born of any particular pattern of action is not revolution at all, and that if we are to bring about a new generation with a new way of thinking, we must find out what the function of knowledge is.

What is knowledge—not the dictionary meaning, or a definition? Is it not the cultivation of memory along a particular line? Is it not the development of the faculty of gathering information to be utilized towards a particular end? Without knowledge, obviously, modern existence is almost impossible. Can knowledge, which is the cultivation of

ज्ञान और विशेषज्ञता

मुझे ऐसा लगता है कि ज्ञान एवं विशेषज्ञता का प्रश्न अत्यंत गंभीर प्रश्न है। आइए हम इस पर विचार करें और देखें कि क्या वह मन, जिसे विशेषज्ञता हासिल करने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है, जांच-पड़ताल और खोजबीन करने के लिए स्वतंत्र है कि जो कुछ उसे ज्ञात है उससे परे कुछ है या नहीं; क्या वह इस बात की परख कर पाता है कि ज्ञान उसे कहां ले जा रहा है तथा विशेषज्ञता की सार्थकता क्या है?

ज्ञान के अनेक रास्ते हैं और बड़े पैमाने पर अधिक-से-अधिक जानकारी हमारे लिए उपलब्ध की जा रही है। यह सब हमें किस दिशा में ले जा रहा है? ज्ञान का क्या कार्य है? हम देखते हैं कि हमारे चेतन एवं अचेतन जीवन में, एक खास स्तर पर तो ज्ञान आवश्यक है। क्या इस प्रकार का ज्ञान अस्तित्व की संपूर्ण सार्थकता समझने में, उसके अन्वेषण में, बाधक बन सकता है? उदाहरण के लिए मान लीजिए मुझे इसका ज्ञान है कि पुल कैसे बनाया जाता है। क्या वह ज्ञान विचार करने के मेरे तरीकों में आमूल परिवर्तन ला सकता है? हो सकता है यह सतही बदलाव ले आए या सामंजस्य बैठा ले, किंतु विश्व के वर्तमान संकट में ज़रूरी क्या है, मात्र सतही सामंजस्य या आधारभूत क्रांति? मुझे महसूस होता है कि किसी विशिष्ट प्रणाली के अनुसार किए जानेवाले कार्य से घटित होनेवाली क्रांति वस्तुतः क्रांति ही नहीं होती और यदि नये तरीके से सोचविचार करने वाली कोई नयी पीढ़ी हमें विकसित करनी है तो हमें इसका पता लगाना आवश्यक होगा कि ज्ञान का कार्य क्या है।

ज्ञान क्या है?—शब्दकोश में दिए गए अर्थ या किसी परिभाषा के अनुसार नहीं। क्या किसी विशेष क्रम में स्मृति का संवर्धन करना ही ज्ञान नहीं है? क्या यह किसी खास उद्देश्य के लिए सूचना एकत्रित करने की क्षमता का विकास करना ही नहीं है? इसमें संदेह नहीं कि ज्ञान के अभाव में आधुनिक ढंग का जीवन जी पाना लगभग असंभव है। ज्ञान है स्मृति का संवर्धन करना, जानकारी एकत्रित करना और फिर खास उद्देश्यों, जैसे कि

Chapter 18

memory, the gathering of information, and the using of that information for special purposes—for surgery, for wars, for uncovering new scientific facts, and so on—be a hindrance to the total understanding of human society?

As I said, knowledge may be useful at one particular level. But if we do not understand the total process of human existence, will not that knowledge be a hindrance to human peace? For example, we have scientific information enough to create food for the whole of mankind and to give them shelter. Why is it that that scientific knowledge is not used? Is that not a problem to most of us? Is not that very knowledge preventing the consideration of human understanding and peace?

What is preventing the stoppage of war, of feeding man, clothing him, giving him shelter? It is surely not knowledge, it is something entirely different. It is nationalism and vested interests in various forms—capitalistic or communistic or of a particular religious group—which are preventing the coming together of man. Unless there is a radical change in our ways of thinking, knowledge is used, is it not, for the further destruction of man. What are the universities of learning doing, the academic as well as the spiritual? Are they producing, bringing about, a fundamental revolution in our hearts and minds? It seems to me, that is the fundamental issue, and not the constant accumulation of further information and knowledge.

Can a total revolution take place through knowledge, which is, after all, the continual development of the mind through memory? I may know various facts, I may know the distances between the various planets, I may know how to run jet planes, but will that knowledge,

शल्य-चिकित्सा, युद्ध, नये वैज्ञानिक तथ्यों की खोज, इन सब के लिए उस जानकारी का उपयोग करना। क्या यह संभव है कि यह सारी जानकारी मानव-समाज की व्यापक समझ में आड़े आती हो?

जैसा कि मैंने कहा, एक खास स्तर पर ज्ञान अवश्य ही उपयोगी हो सकता है। परंतु यदि हम मानवीय अस्तित्व की समग्र प्रक्रिया को नहीं समझते हैं तो क्या यही ज्ञान मानव की शांति के लिए बाधक नहीं बन जाता? उदाहरण के लिए, हमारे पास ऐसी वैज्ञानिक जानकारी है कि हम समूची मानव जाति के लिए पर्याप्त अन्न पैदा कर सकते हैं और उनके रहने के लिए स्थान की व्यवस्था भी कर सकते हैं। तो फिर ऐसा क्यों है कि इस वैज्ञानिक ज्ञान का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है? क्या यह हममें से अधिकांश के लिए समस्या नहीं है? क्या यही ज्ञान ही मानवीय समझ और शांति को अवरुद्ध नहीं कर रहा है?

ऐसा क्या है जो युद्धों को रोकने से, लोगों को भोजन-वस्त्र आदि दे पाने से, उनके लिए आवास की व्यवस्था कर पाने से हमें रोकता है? निश्चित ही वह ज्ञान नहीं बल्कि उससे सर्वथा भिन्न कुछ और ही है। वह है राष्ट्रवाद और निहित स्वार्थ के विभिन्न रूप—पूंजीवाद या साम्यवाद या विशिष्ट धार्मिक समुदाय जो मनुष्य को मनुष्य के साथ नहीं होने देते। क्या आपको नहीं लगता कि हमारे विचार करने के तरीकों में जब तक मूल रूप से बदलाव नहीं आता तब तक ज्ञान का प्रयोग मनुष्य के लिए और भी अधिक विनाशकारी होगा? शिक्षा प्रदान करनेवाले और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करनेवाले विश्वविद्यालय क्या कर रहे हैं? क्या वे हमारे हृदयों और मन-मस्तिष्कों में कोई आमूल क्रांति ला रहे हैं? मैं समझता हूँ कि यही हमारे सामने मूल मुद्दा है। अधिक-से-अधिक सूचनाएं जमा करते जाना, ज्ञान एकत्रित करते जाना उतने महत्त्व की बात नहीं है।

ज्ञान तो स्मृति के माध्यम से मन का अनवरत विकास करते रहना भर है, इसलिए प्रश्न यह है कि क्या ज्ञान के माध्यम से समग्र क्रांति हो पाना संभव है? हो सकता है कि मुझे अनेक तथ्यों की जानकारी हो, मुझे विभिन्न ग्रहों के बीच की दूरी ज्ञात हो, मुझे यह पता हो कि जेट हवाई जहाज

Chapter 18

will that information, bring about a radical change in my thinking? If it cannot, what will it bring about? Is it not a problem for most of us?

We want peace in this world; we want to put an end to envy which arises in human individuals in their search for power; we want to put an end to wars. How is this to be done? Will mere accumulations of knowledge put an end to wars, or must there be a radical revolution in our thinking? Will thinking produce that revolution? I do not know if you have considered any of these points, but it seems to me, a revolution based on a particular pattern of thought is not a revolution at all. After all, thinking is the response to a particular condition, the response to a challenge according to a particular background. I respond to a challenge according to my conditioning, to my training, to my upbringing as a Christian or a Hindu or a Muslim or whatever I am. How is that background, that conditioning, that peculiar pattern of action to cease, and a new way of thinking to be born? Is this not a problem to most of us? Because, there cannot be a radical revolution unless the breaking of all the background takes place, of the pattern of our constant thinking along a particular line.

Will knowledge, the accumulation of information about facts, bring about the breaking of my conditioning? Yet, this is what we are doing; we are constantly accumulating information, knowledge, training our memory. All this is important at one particular level. We may search out information about the whole consciousness of man, about the psychological process of uncovering oneself—mostly intellectual, mostly verbal—through specialization. But,

किस तरह से उड़ाया जाता है, परंतु क्या यह जानकारी, यह सूचना मेरे सोचने के तरीके में बुनियादी बदलाव ला सकती है? और यदि यह ऐसा नहीं कर सकती तो इससे क्या हासिल होने वाला है? क्या हममें से ज्यादातर के लिए यह एक समस्या नहीं है?

हम इस संसार में शांति चाहते हैं, हम चाहते हैं कि मानव-मानव के बीच सत्ता की लिप्सा के कारण उत्पन्न होनेवाला द्वेष खत्म हो, हम चाहते हैं कि युद्ध बंद हों। यह कैसे किया जाए? सिर्फ ज्ञान इकट्ठा कर लेने से क्या युद्ध बंद हो जाएंगे? या इसके लिए हमारी सोच में भी आमूल बदलाव होना ज़रूरी है? क्या विचार के माध्यम से ऐसी क्रांति लायी जा सकेगी? मैं नहीं जानता कि आपने इन बिंदुओं पर ध्यान दिया है कि नहीं लेकिन मुझे लगता है कि किसी खास विचारधारा पर आधारित क्रांति वास्तव में क्रांति नहीं होती। क्योंकि अंततः सोचना किसी विशेष परिस्थिति को दिया जानेवाला एक प्रत्युत्तर भर होता है, किसी विशिष्ट पृष्ठभूमि के अनुसार किसी चुनौती पर की जानेवाली एक प्रतिक्रिया मात्र होता है। ईसाई, हिंदू या मुस्लिम या जिस भी रूप में मुझे संस्कारित किया गया होता है, मुझे जिस तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है उसी के अनुसार मैं किसी चुनौती का प्रत्युत्तर देता हूँ। उस पृष्ठभूमि का, उस संस्कारबद्धता का, आचरण के उस खास ढर्रे का अंत कैसे हो ताकि नये तरह का चिंतन जन्म ले सके? क्या यही हममें से अधिकांश की समस्या नहीं है? क्योंकि जब तक उस पूरी पृष्ठभूमि को मिटा नहीं दिया जाता है, किसी खास लीक पर निरंतर चल रहे हमारे विचार के ढांचे को जब तक तोड़ नहीं दिया जाता तब तक आमूल क्रांति नहीं हो सकती।

क्या ज्ञान अर्थात् तथ्यों के संबंध में जानकारियों का संग्रह, मेरी संस्कारबद्धता को तोड़ पाने में सफल होगा? लेकिन फिर भी हम यही कोशिश करते रहते हैं, हम सूचनाओं और ज्ञान का लगातार संग्रह करते रहते हैं, अपनी स्मृति को प्रशिक्षित करते जाते हैं। एक स्तर पर तो यह सब आवश्यक है। विशेषज्ञता के माध्यम से हम--खास तौर से बौद्धिक एवं शाब्दिक स्तर पर--मनुष्य की संपूर्ण चेतना के बारे में और स्वयं को अनावृत करने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के बारे में बहुत सी जानकारियां खोज सकते हैं। परंतु क्या उससे कोई

Chapter 18

will that bring about a radical change? It seems to me that mere information, knowledge, will not bring about a radical change. There must be a totally different factor, and that is the understanding of the process of consciousness, of the mind that is constantly accumulating, gathering information.

Why are we gathering information, knowledge? It is for the purpose of security, which is essential at one level of our being. Some people think that knowledge is a means of discovery. Do we discover through knowledge? Does not knowledge impede discovery? How can the mind find this out if the whole mind is trained to merely gather information, knowledge? Must not the mind examine this question free from any anchorage, from any belief, from any knowledge? The mind, having information, having knowledge, must be free of it in order to find out; otherwise, it cannot find out.

After all, there is a conflict in all of us between the conscious and the unconscious, between the superficial ways of thinking and the hidden processes of motives, desires, anxieties, and fears. We are gathering information, knowledge at the superficial level, without fundamentally altering the deeper levels of our consciousness. The most important thing in the present crisis is that the revolution should take place at the unconscious level, and not merely at the conscious level. Revolution at the unconscious level is not possible if the conscious mind is merely cultivating memory. Is not the problem, with all of us, how to bring about this revolution deep in ourselves?

After all, the individual is the man; the

आमूल परिवर्तन घटित हो पाएगा? मुझे यह लगता है कि केवल जानकारी मूलभूत बदलाव नहीं ला पाएगी। इसके लिए एक पूर्णतः भिन्न प्रकार का कारक होना भी ज़रूरी है और वह कारक है चेतना की उस प्रक्रिया को, उस मन को समझना जो अनवरत जानकारियों का संग्रह करता रहता है।

हम सूचनाएं, जानकारियां क्यों इकट्ठा करते रहते हैं? ऐसा हम सुरक्षा के उद्देश्य से करते हैं और ऐसा करना एक हद तक हमारे अस्तित्व के लिए ज़रूरी भी है। कुछ लोग सोचते हैं कि ज्ञान खोज का एक साधन है। क्या हम ज्ञान के माध्यम से खोजते हैं? क्या ज्ञान खोज में बाधा नहीं डालता है? यदि हमारा पूरा मन सिर्फ जानकारी एकत्र करने के लिए ही प्रशिक्षित किया गया है तो यह सब वह कैसे पता लगा पाएगा? क्या यह ज़रूरी नहीं है कि मन इस प्रश्न की जांच-परख किसी भी प्रकार के आश्रय से, किसी भी विश्वास और तमाम जानकारियों से मुक्त रहकर ही करे? यदि इसका पता लगाना है तो जानकारियां होते हुए भी, ज्ञान होते हुए भी यह आवश्यक है कि मन उस सबसे मुक्त रहे--नहीं तो वह कुछ भी पता नहीं लगा सकेगा।

इसमें कोई शक नहीं कि हममें से हर एक के भीतर एक द्वंद्व चलता रहता है, चाहे वह चेतन एवं अचेतन के बीच हो या सोचने के सतही तरीकों तथा विभिन्न प्रेरणाओं, इच्छाओं, चिंताओं एवं भयों की प्रच्छन्न प्रक्रियाओं के बीच। हम अपनी चेतना के गहनतर तलों में कोई मूलभूत परिवर्तन लाए बिना ही सिर्फ सतही स्तर पर ही सूचनाएं व ज्ञान एकत्रित करते रहते हैं। वर्तमान संकट की स्थिति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यही है कि क्रांति अचेतन तल पर होनी चाहिए न कि महज़ चेतन स्तर पर। जब तक हम मात्र स्मृति के संवर्धन में लगे हुए हैं तब तक अचेतन स्तर पर क्रांति नहीं हो सकती। क्या हम सभी की समस्या यही नहीं है कि अपने भीतर, गहराई में यह क्रांति कैसे हो?

आखिरकार हर व्यक्ति मनुष्य ही तो है, सारा

Chapter 18

whole world is not different from you and me, and it is the individual that brings about the radical transformation. History shows how a few individuals, different from others in their way of living, have wrought a change in society. Unless we individually transform ourselves deeply, fundamentally, I do not see any possibility of having peace and tranquillity in this world.

How is the individual—that is, you and I—to change radically at the deep, unconscious level? Is it brought about by the practice of a particular ideal or a particular virtue? Is not the cultivation of a particular virtue merely the strengthening of that consciousness which is pursuing the accumulative process of memory, the strengthening of the self, of the ego? Is not the practice of a particular idea or an ideology still a strengthening of the self, the ‘me’, with the inevitable conflict within and without—which is the fundamental cause of wars?

Can there be a revolution in the ‘me’ through the action of will? I do not know if you have exercised will in order to bring about a change. You must have noticed that the action of will is still at the conscious level and not at the unconscious level. And mere alteration or exercise of will at the conscious level does not produce a revolution, an alteration, a radical change in our ways of thinking. So, is it not important to find out, for each one of us, how the mind works, not according to any particular philosophy, but actually observing the ways of our mind in action, the ways of our life, so that through the understanding of the superficial mind, it may be possible to go beneath the surface and understand the whole mind?

Unless we bring about an integration

संसार आपसे और मुझसे भिन्न नहीं है और व्यक्ति ही आमूल परिवर्तन को संभव बना सकता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि कैसे थोड़े से व्यक्ति बाकी लोगों से अलग तरह का जीवन जीते हुए इस समाज में अनेक परिवर्तन ला सके। एक व्यक्ति के रूप में जब तक हम अपने आपमें गहराई से, बुनियादी रूप से परिवर्तित नहीं होते तब तक इस संसार में अमन-चैन की कोई संभावना मुझे नजर नहीं आती।

व्यक्ति का, अर्थात् मेरा एवं आपका, गहन एवं मूलभूत रूप से अचेतन तल पर परिवर्तित हो पाना कैसे संभव होगा? क्या यह किसी विशेष आदर्श या किसी विशेष सद्गुण को विकसित करने से संभव होगा? क्या किसी विशेष सद्गुण का संवर्धन महज़ उस चेतना को शक्तिशाली बनाना नहीं है जो स्मृति की संचय की, संग्रह की प्रक्रिया पर आधारित है, और जो स्व को, अहं को शक्तिशाली बनाती है? किसी विशिष्ट धारणा या आदर्शवाद का अभ्यास भी क्या स्व को, ‘मैं’ को दृढ़ करना नहीं है, जो भीतर और बाहर अनिवार्य रूप से द्वंद्व पैदा करता है और जो युद्धों का मूलभूत कारण है?

क्या इच्छा शक्ति की क्रिया के द्वारा ‘मैं’ के भीतर कोई क्रांति हो सकती है? मैं नहीं जानता कि आपने बदलाव लाने के लिए कभी इच्छा शक्ति का प्रयोग किया है या नहीं। आपने देखा होगा कि इच्छा शक्ति की क्रिया भी सिर्फ चेतन तल पर ही हुआ करती है और अचेतन तक इसका प्रभाव नहीं जाता। और सिर्फ चेतन स्तर पर बदलाव करने से या इच्छा शक्ति का प्रयोग करने से हमारे सोचने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव, मूलभूत परिवर्तन नहीं आ पाता। अतः किसी दार्शनिक प्रणाली का अवलंबन लेकर नहीं बल्कि स्वयं ही यह पता लगाना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि मन कैसे कार्य करता है, अपने जीवन के तौर-तरीकों के प्रत्यक्ष अवलोकन से क्या यह पता लगाना ज़रूरी नहीं है कि हमारा मन कैसे कार्य करता है, ताकि सतही मन को अच्छी तरह समझते हुए हम उस सतह के नीचे जा सकें तथा समूचे मन को समझ सकें।

जब तक विचारक और विचार, दोनों में अभेद,

Chapter 18

between the thinker and the thought, mere thinking, reason, philosophy, accumulation of knowledge, will be used by the thinker as a means of self-aggrandizement, either of the individual or of a group, or for the propagation of a particular ideology. So is it important, for those who are really serious about these matters, to find out how the total integration of man can take place. Obviously, it cannot be through any form of compulsion or persuasion or through disciplinary processes, or through any action of will because they are all, if one really looks at it, on the surface level.

So, our problem then is, how is this total transformation of our being to come about? We have tried through authority, through compulsion, through conformity, through imitation. If we understand the truth of compulsion, the truth of discipline, the truth of imitation or conformity, then the superficial mind becomes free from these compulsory imitative processes, and so the superficial mind becomes quiet. Then, the total, unconscious processes can project themselves into the conscious, and in their projection, there is a possibility of uncovering them, understanding them and being free.

Whenever there is understanding of any deep facts of life, the mind is invariably still, not making an effort to understand. It is only when the mind is entirely still that there is a possibility of an understanding which brings about a radical revolution in our life.

दोनों का एकीकरण नहीं हो जाता तब तक सोचने का, तर्क, दर्शन और ज्ञान के संग्रह आदि का प्रयोग विचारक द्वारा एक व्यक्ति विशेष के लिए या समूह के लिए अथवा विशिष्ट आदर्शवाद के प्रचार-प्रसार के लिए अथवा अपने महिमामंडन के एक साधन के रूप में किया जाता रहेगा। अतः जो इन विषयों के प्रति वास्तव में गंभीर हैं उन्हें इसका पता लगाना ज़रूरी है कि मनुष्य अपने में पूर्णरूप से अविभाजित किस प्रकार से हो सकता है। इसमें संदेह नहीं कि किसी प्रकार की बाध्यता से या आग्रह द्वारा, अथवा अनुशासन की किसी प्रक्रिया या इच्छाशक्ति के माध्यम से यह संभव न होगा, क्योंकि ध्यान से निरीक्षण करने पर स्पष्ट हो जाता है कि ये सभी केवल सतह तक ही असरदार होते हैं।

अतः हमारी समस्या यह है कि हमारी चेतना का पूरी तरह से रूपांतरण कैसे संभव हो? सत्ता-मान्यता, ज़ोरज़बरदस्ती, परंपरापालन और अनुकरण आदि तरीके आजमाकर हम देख ही चुके हैं। यदि हम इस तथ्य-सत्य को समझ पाते हैं कि बलप्रयोग, अनुशासन, अनुकरण अथवा अनुसरण से रूपांतरण संभव नहीं है तो सतही मन इन अनुकरण की बाध्यकारी प्रक्रियाओं से छुटकारा पा लेता है और इस प्रकार शांत हो जाता है। इसके पश्चात समूची अचेतन प्रक्रियाएं अपने आपको चेतन तल पर प्रक्षेपित कर पाती हैं, और उनके इस प्रकार के प्रक्षेपण में उनके उघड़ने की, उन्हें समझने, उनसे मुक्ति पाने की संभावना होती है।

जब भी जीवन के किसी गहन तथ्य की समझ हममें पैदा होती है तो मन प्रायः अवश्य ही निश्चल हो जाता है, उस स्थिति में वह समझने के लिए कोई प्रयास नहीं कर रहा होता। जब मन पूर्णतः मौन हो जाता है केवल तभी वह समझ संभव है जो हमारे जीवन में आमूल क्रांति ला देती है।